प्रिय प्रदीप,

→ आपकी कंटेंट की बेहतर समझ है।

→ उत्तर की संरचना प्रभावी है।

→ आपके उत्तर में प्रेमचंद की तुलना अन्य दलित विचारकों तथा लेखकों से करना बेहतर है।

→ इसी तरह, लेखन कार्य जारी रखें। भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

12/10/25

प्रश्न: 70- दलित जीवन-चित्रण के सन्दर्भ में प्रेमचंद की कहानीयों पर विचार कीजिए। क्या उन पर दलित विरोधी होने के आरोपों को आप उचित मानते हैं।

प्रेमचंद के लेखन का दौर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है क्योंकि उसी समय डा. अंबेडकर दलित मानवाधिकारों का प्रश्न स्वाधीनता संग्राम के नेताओं के सामने रख रहे थे। यह स्वाभाविक ही है कि प्रेमचंद भी दलितों के सामाजिक यथार्थ को व्याख्यायित करते हैं।

विवरण सटीक है

प्रेमचंद ने दलित समाज के चित्रण के क्रम में कई महत्वपूर्ण कहानीयों की रचना की है जो चिंतन के अलग-अलग स्तर पर व्याख्यायित होती हैं जैसे- गुल्ली डंडा, दूध का दाम, सद्गति, कफन, ठाकुर का कुँआ इत्यादि।

कहानी 'गुल्ली-डंडा' में दलित जीवन का चित्रण गया के माध्यम से किया गया है। इसमे प्रेमचंद ने दलित होने व शोषण झेलने का विस्तृत चित्रण न करके गया के सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े रह जाने का कारण को अंकित किया है। जैसे- "मैं अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गयी है।"

good

प्रेमचंद ने दूध का दाम कहानी में दलित संवेदना को प्रखरता से प्रस्तुत करते हुए दिखाया है कि दलित बच्चे 'मंगल' से उसकी 'माँ भुंगी' का दूध छीनकर मालिक के बेटे 'सुरेश' को उपलब्ध कराया जाता है तथा इसके बावजूद मंगल को अमानवीय परिस्थितियों में जीना पड़ता है। इसी संदर्भ में मंगल 'टॉमी' से कहता है," देखा, पेट की आग ऐसी होती है! यह लात की मारी हुई रोटियाँ भी न मिलतीं तो क्या करते?"

सद्‌गति में दलित चेतना को ज्यादा मुखरता से उद्घाटित करते हुए प्रेमचंद दिखाते हैं कि कैसे 'पंडित घासीराम' 'दुखी चमार' का भरपूर शोषण करते हैं, 'पंडिताईन' आग फेंक कर देती हैं एवं शोषण और संवेदनहीनता का चरम उत्कर्ष तब होता है जब दुखी चमार के मृत शरीर को पंडित घसीटकर गाँव के बाहर ले जाते हैं।

इसी सन्दर्भ में गोंड ने चमरौने में जाकर सबसे कहा कि," खबरदार, मुर्दा उठाने मत जाना। ××× ××× ××× पंडित होंगे तो अपने घर के होंगे।

'कफन' जैसी कहानी एवं रंगभूमि जैसी उपन्यासों को लेकर दलित - विमर्श के कुछ चिंतको द्वारा यह आक्षेप लगाया जाता है कि प्रेमचंद दलित - विरोधी थे जिसका समर्थन प्रेमचंद

प्रश्नानुसार सटीक तथा प्रभावी विश्लेषण

की 'बूढ़ी-काकी' कहानी से प्राप्त करते हैं क्योंकि उसके प्रसंग जूठा पत्तल चाटने में चिंतकों को ब्राह्मण वर्ण के प्रति सहानुभूति दिखती है।

किन्तु ये आरोप पूर्णतया निराधार हैं क्योंकि कफन में 'घीसू' और 'माधव' को बुधिया के प्रति जितना संवेदनहीन और अमानवीय दिखाया गया है वो उनके दलित वर्ग के होने के कारण नहीं बल्कि जिल्लत भरी जिन्दगी और मुश्किलों से लड़ते-लड़ते रहने के कारण हुआ है।

समग्रतः प्रेमचंद ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने अपने समय के परिपेक्ष्य में दलित विमर्श को ठोस आधार प्रदान किया है। आज ओमप्रकाश वाल्मिकी और मोहनदास नैमिषराय द्वारा दलित विमर्श गहरे स्तर पर ले जाया गया जिसकी पृष्ठभूमि प्रेमचंद द्वारा तैयार किया गया है।